अमर चित्र कथा

छत्रपति शिवाजी

संख्या ५६४ | रू. ३०

www.amarchitrakatha.com

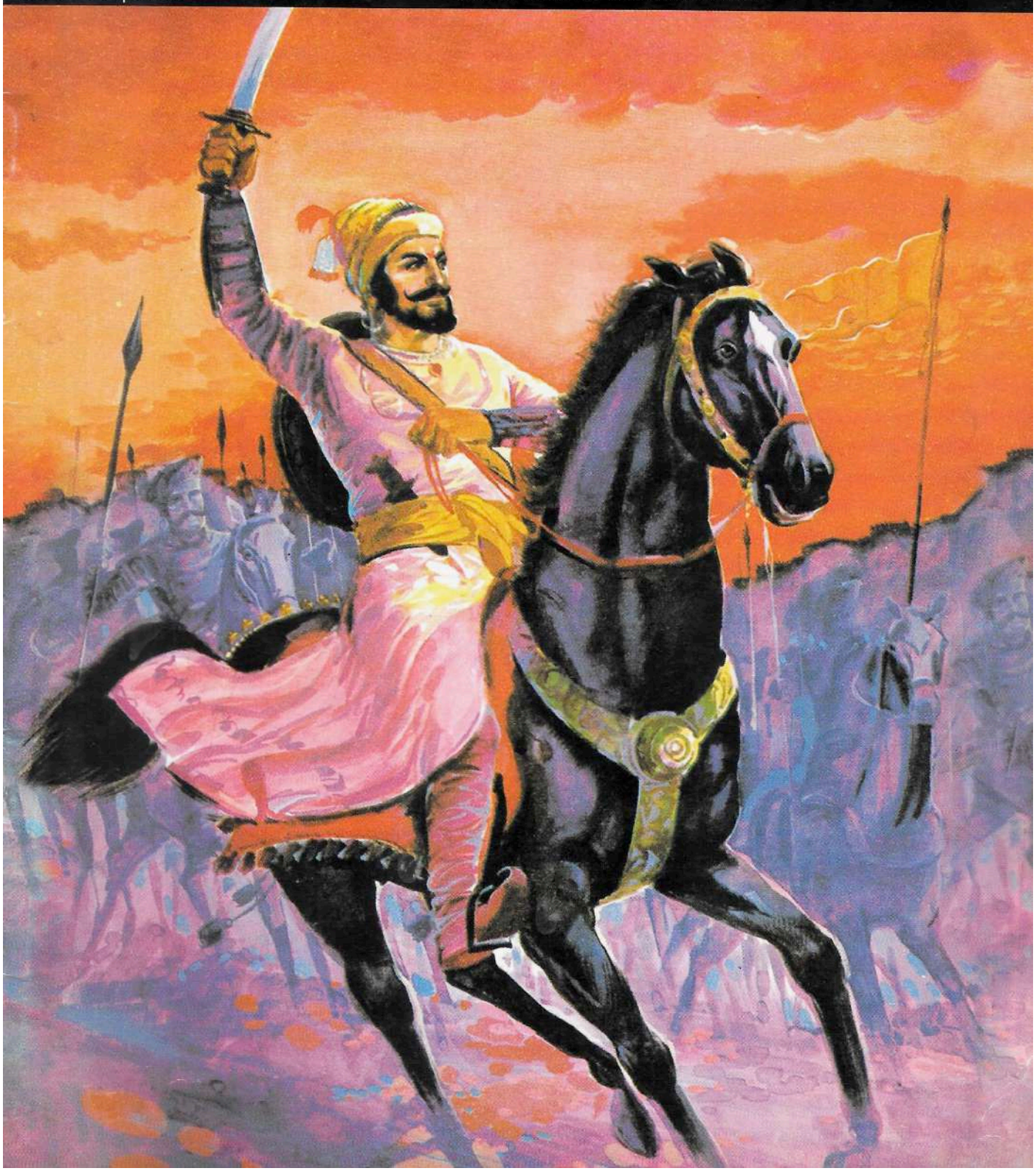

तलाश अपनी जड़ों की

छत्रपति शिवाजी

सत्रहवीं शताब्दी में भारत के उत्तरी तथा मध्यवर्ती भागों में मुगलों का बोल-बाला था। दक्षिण में बीजापुर के आदिल शाह जैसे नरेशों और जंजीरा के नवाब जैसे छोटे शासकों के बीच लड़ाइयाँ चला करती थीं। और जैसा कि हमेशा होता है, इन दोनों के बीच जनता गेहूँ के घुन की तरह पिसती थी। अधिकारी तथा लड़ाकू खान और सरदार सभी उसे सताते थे। शताब्दियों से विदेशी शासकों की गुलामी करके राजपूतों जैसी वीर जातियाँ भी अपना हौसला गँवा चुकी थीं। उसमें से अनेक तो ऊँचे ओहदे पा कर अपने विदेशी स्वामियों के हाथ की कठपुतली बन कर रह गये थे। कोई नर-पुंगव ही जनसाधारण को इन परिस्थितियों से त्राण दिला सकता था।

इस संकट की घड़ी में शिवाजी का जन्म हुआ। उनके पिता अप्रतिम शूरवीर थे तथा माता अत्यन्त बुद्धिमान एवं ममतामयी। शिवाजी के चरित्र पर माता-पिता तथा उनके गुरु, दादोजी कोंडदेव का बहुत प्रभाव पड़ा। बचपन से ही वे उस युग के वातावरण और घटनाओं को भली प्रकार समझने लगे थे। शासक वर्ग की करतूतों पर वे झल्लाते थे और बेचैन हो जाते थे। उनके बाल-हृदय में स्वाधीनता की लौ प्रज्वलित हो गयी थी। उन्होंने कुछ स्वामिभक्त साथियों का संगठन किया। अवस्था बढ़ने के साथ विदेशी शासन की बेड़ियाँ तोड़ फेंकने का उनका संकल्प प्रबलतर होता गया।

शिवाजी ने इस आकांक्षा को कैसे सिद्ध किया - इसकी सचित्र कथा यहाँ प्रस्तुत है।

Editor : Anant Pai
Script : B.R. Bhagawat Illustrations : Pratap Mulik
Cover : Pratap Mulik

संख्या ५६४ : रू.३०

अमर चित्र कथा प्रा. लि.

© अमर चित्र कथा प्रा. लि., १९७१; पुनर्मुद्रण :अक्टूबर २००९ ISBN ८१-८४८२-२६९-३.
प्रकाशक तथा मुद्रक : अमर चित्र कथा प्रा. लि., १४, मार्तंड, ४थी मंजिल,
८४, डॉ. एनी बेसंट मार्ग, मुंबई ४०० ०१८, भारत

छत्रपति शिवाजी

19 फ़रवरी, 1630 का दिन। सूरज ढल रहा था कि महाराष्ट्र में शिवनेरी के दुर्ग में नगाड़े गूँज उठे – जीजाबाई ने पुत्र-रत्न को जन्म दिया था। उनके पति शाहजी बीजापुर के सुल्तान की ओर से लड़ने युद्ध-क्षेत्र में गये हुए थे। सैकड़ों वर्षों से मराठों पर विदेशी शासक शासन कर रहे थे। **शिवाजी** के जन्म के समय बीजापुर का सुल्तान तो था ही, दिल्ली में मुग़ल सम्राट था और तटवर्ती क्षेत्र में हबशी सिद्दी जोहार।

शिवाजी कुछ बड़े हुए तो शहाजीने उन्हें बीजापुर ले जा कर प्रख्यात गुरु, दादाजी कोण्ड देव का शिष्य बना दिया।

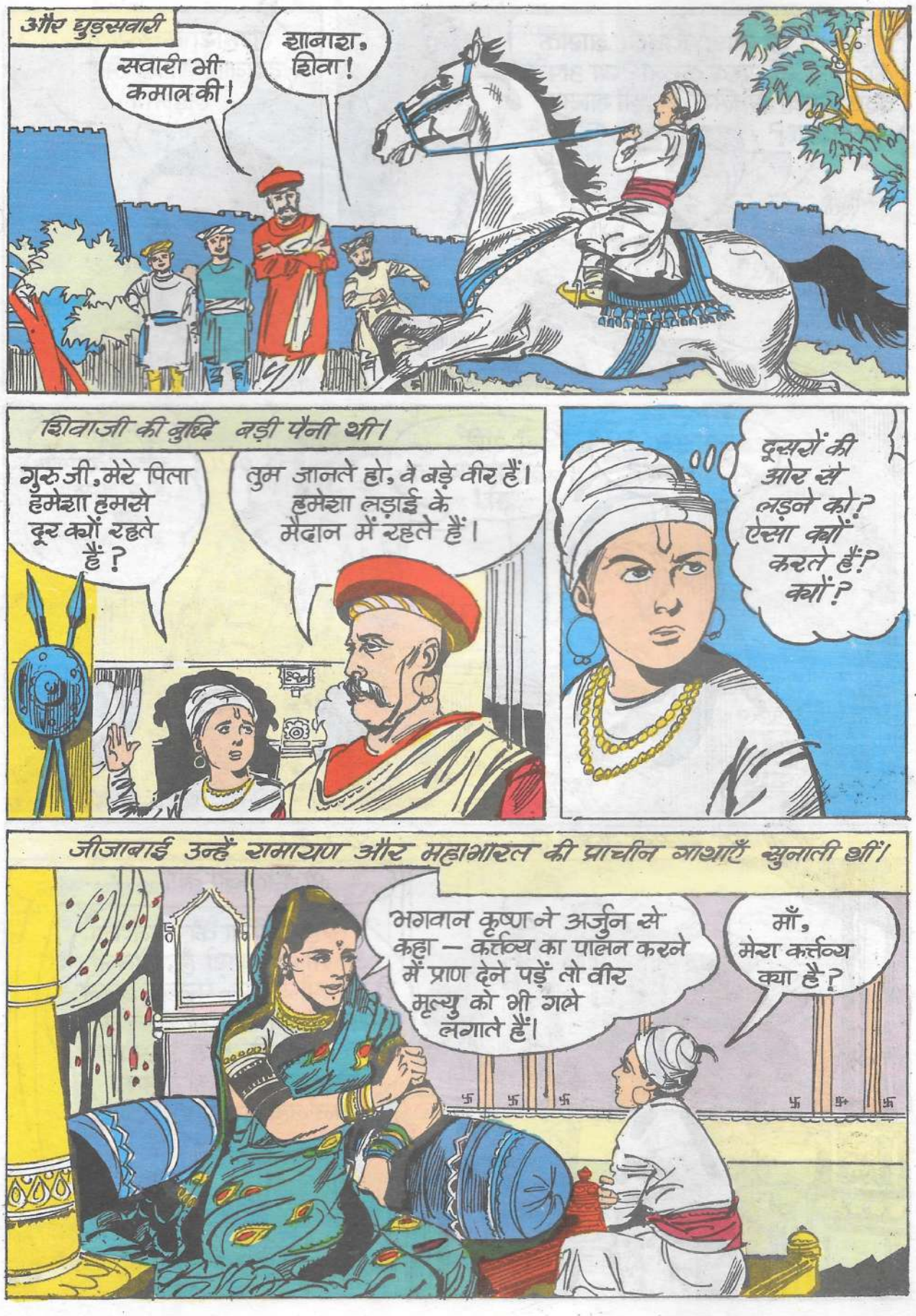
और घुड़सवारी
सवारी भी कमाल की!
शाबाश, शिवा!
शिवाजी की बुद्धि बड़ी पैनी थी।
गुरु जी, मेरे पिता हमेशा हमसे दूर क्यों रहते हैं?
तुम जानते हो, वे बड़े वीर हैं। हमेशा लड़ाई के मैदान में रहते हैं।
दूसरों की ओर से लड़ने को? ऐसा क्यों करते हैं? क्यों?
जीजाबाई उन्हें रामायण और महाभारत की प्राचीन गाथाएँ सुनाती थीं।
भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा — कर्त्तव्य का पालन करने में प्राण देने पड़ें तो वीर मृत्यु को भी गले लगाते हैं।
माँ, मेरा कर्त्तव्य क्या है?

पिताजी के साथ विदेशी शासक की ओर से युद्ध करना? या अपने देशवासियों के लिये विदेशी शासक से लड़ना?
तुम्हारा कर्त्तव्य है देशवासियों के लिए लड़ना।
सुल्तान के विरुद्ध?
हाँ यदि आवश्यकता हो!
जो मुझे उचित लगता है मैं इसे वही बताऊँगी।
जीजाबाई समझ गयीं कि उनका पुत्र बेचैन है।
तो पिताजी क्यों.....
तुम्हारे पिता को स्वतंत्रता उतनी ही प्यारी है, जितनी किसी और को – परन्तु इतने लम्बे समय से सुल्तान की सेवा में हैं कि अब उसका विरोध करने को उनका मन नहीं करता।

एक दिन—
दादाजी, मैंने सुल्तान से आपको पूना का जिलाधीश नियुक्त करवा दिया है।
आप शिवा और उसकी माता को अपने साथ ले जाइये।
बहुत अच्छा!
शिवाजी ने यह यात्रा राजकुमारों की तरह की।
यह रमणीक धरती हमारी है। इसके महान् दुर्गों पर हमारा आधिकार होना चाहिए।
पूना में शिवाजी की मित्रता सह्याद्रि के भोले और बलवान किशोरों से हुई। वे आपस में झूठ-मूठ के युद्ध करते थे।
हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर लेते तब तक चैन नहीं लेंगे।

दादाजी नाम को तो राजस्व अधिकारी थे लेकिन वास्तव में पूना का शासन उन्होंने अपने हाथ में ले लिया था। शिवाजी ने उनके पास रहते हुए ही योजना बनायी।

शिवाजी ने पहला महत्त्वपूर्ण दुर्ग जीता तोरणा का।

जीजाबाई ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

शिवाजी की गतिविधियों से सुल्तान आगबबूला हो गया।

सुना है, सुल्तान ने तुम्हें सीख देने के लिये तुम्हारे पिता को बन्दी कर लिया है।

लम्पट सेनापति अफ़जल खाँ ने शहाजी के हाथों में हथकड़ियाँ डालीं।

और सुल्तान ने हम पर हमला करने को सेना भेजी है।

मेरे पिता बन्दी हैं। सीख की आवश्यकता तो सुल्तान को है।

सेना जब वहाँ पहुँची, शिवाजी पुरन्दर के दुर्ग में थे।

जाओ– सेना से लोहा लो।

शत्रु के कुछ सैनिकों ने एक छोटे से किले में डेरा डाला था। शिवाजी के सैनिकों ने वहाँ आक्रमण कर के उन्हें हरा दिया।

शत्रु ने जब पुरन्दर के दुर्ग पर हमला किया तो हर तरह से प्रयत्न कर के उसे हरा दिया।

सुल्तान को सीख मिल गयी।

शहाजी को मुक्त कर दो। उनका पहले जैसा ही सम्मान किया जाये।

परन्तु बदले की आग सुलग रही थी। कुछ ही समय बाद बीजापुर के शक्तिशाली सेनापति अफजल खाँ ने विशाल सेना ले कर शिवाजी पर चढ़ाई की।

मैं जीवित या मृत उस पहाड़ी चूहे को पकड़ूँगा।

वह शहरों और गाँवों में आतंक फैलाता चला आ रहा था।

अफ़ज़ल खाँ की सेना ने वाई के पहाड़ी इलाक़े में डेरा डाला और सैनिक आस-पास लूट-पाट करने लगे।

शिवाजी उस समय वाई के पास ही प्रतापगढ़ के क़िले में ठहरे हुए थे।

तभी अफ़ज़ल खाँ का दूत सन्देश लाया।

शिवाजी ने चतुराई से काम लिया।
अफ़ज़ल ख़ाँ मेरे पिता समान हैं। अपनी शक्ति से मुझे डराते क्यों हैं?
आप उनके शिविर में आयेंगे?
जी नहीं। वे प्रतापगढ़ आयें। मैं किले से उतर कर आधे रास्ते में उनसे मिलूँगा।
उसी बीच एक चिन्ताजनक सूचना मिली।
तुम्हारा मतलब है - अफ़ज़ल ख़ाँ मुझे मारना चाहता है। मैं तैयार हो कर जाऊँगा।
शिवाजी ने कपड़ों के नीचे कवच पहना। देवी भवानी से प्रार्थना की।

अफ़ज़ल खाँ दो रक्षकों के साथ पालकी में आया।
चूहे ने कहा था – सेना मत लाना। कायर!
शिवाजी दो रक्षकों के साथ उससे मिलने को दुर्ग से उतरे।
तेरा अन्त-काल आ गया।
आओ, बेटे –
उसने प्रेम का ढोंग करते हुए शिवाजी को गले लगाया।
वह छुरे से वार करने जा रहा है।

शिवाजी ने बायें हाथ से छुरा छीन लिया और दायाँ हाथ ऊपर उठाया।
सीधे हाथ की उँगलियों में चढ़े हुए बाघ-नखों से अफ़ज़ल खाँ का पेट चिर गया।
या अल्लाह!

अफ़ज़ल लड़खड़ा कर गिर पड़ा –

मर गया – मर गया।

शिवाजी महाराज की जय।

तभी अचानक जंगल में छिपे हुए मराठे सैनिक नारे लगाते हुए शत्रु की सेना पर टूट पड़े।

हर हर महादेव!

सूर्यास्त तक युद्ध होता रहा ।
भाग रहे हैं ।
मैदान हमारे हाथ है ।
सभी ओर खुशियाँ मनायी जाने लगीं ।
अफ़ज़ल खाँ के सर का क्या करें ?
धड़ सहित पूरे सम्मान के साथ दफ़न करो ।
महान व्यक्ति है । मृत शत्रु का अपमान करना उचित नहीं समझता ।

बाल-बाल बचे, मेरे बेटे। युद्ध समाप्त हो गया न?

हाँ, माँ। और सम्पत्ति भी बहुत हाथ लगी है।

शिवाजी ने ज़ोरदार विजय पायी थी। उन्होंने अवसर का सदुपयोग किया।

हम तुरन्त चढ़ाई करेंगे।

और तूफ़ान की सी तेज़ी से वे तेरह दिन में हज़ार मील चले गये – जगह-जगह शत्रु को हराया और अपने राज्य का विस्तार किया।

अन्त में उन्होंने पन्हाला का क़िला जीता जो बड़े महत्त्व का था। और फिर –

पन्हाला हाथ आ गया। लेकिन देखो तो, बाजी!

मानों सैनिकों का सागर उमड़ा आ रहा है!

महाराज, यह हमारा शत्रु सिद्दीजोहार है – तटवर्ती क्षेत्र का शासक।
और समुद्र-पार से आये हुए फिरंगी उसकी सहायता कर रहे हैं।
सिद्दी के सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। निकलने के सब मार्ग बन्द थे।
घेरा कई महीने पड़ा रहा। मराठे वीरता से दुर्ग की रक्षा कर रहे थे।
वर्षा होने ही वाली है।
पानी मूसलाधार बरसने लगा।
इस तरह हम कितना समय निकाल सकेंगे?
चतुराई से काम लेना होगा।

अफ़वाह उड़ रही थी। संध्या को -

शिवाजी का इरादा किला छोड़ देने का है।

ठीक है, फिर हम विशालगढ़ पर आक्रमण करेंगे।

परन्तु रात को -

कहते हैं, शिवाजी किले से भाग गया।

शिवाजी सचमुच एक हजार चुने हुए सैनिकों के साथ किले से निकले - और आँधी-पानी में विशालगढ़ की ओर चल दिये।

वे सावधान हैं न?

जी हाँ - हमारा पीछा किया जा रहा है।

संकरा दर्रा -

इसे पार किया और विशालगढ़ पहुँचे।

आप जायें, स्वामी। हम यहाँ दर्रे का बचाव करेंगे।

बाजी, तुम महान योद्धा हो।

छः सौ मराठे सैनिक ले कर बाजी ने वीरता से शत्रु का सामना किया परन्तु –

अब बच नहीं सकता।

बाजी घातक रूप से घायल हो गये।

दूर, तोप छूटी – यानी स्वामी विशालगढ़ पहुँच गये।

अब मैं शान्ति से मरूँगा।

पन्हाला में सिद्दी जोहार के क्रोध का ठिकाना नहीं रहा।

देखो – सुल्तान ने क्या लिखा है! – लिखा है – मैंने जानबूझ कर शिवाजी को भाग जाने दिया।

सिद्दी को ज्ञात नहीं था कि पन्हाला में बहुत थोड़े सैनिक रह गये थे। शिवाजी नहीं चाहते थे कि वे व्यर्थ मारे जायें। अतः उन्होंने आज्ञा दे दी कि पन्हाला शत्रु के हवाले कर दिया जाये।

खाली क़िला! इसे ले कर क्या करूँ?

जब शिवाजी विशालगढ़ से लौटे तब पूना में एक और बलवान शत्रु आ चुका था— दिल्ली के सम्राट औरंगजेब का सेनापति शाइस्ता ख़ाँ।

शाइस्ता ख़ाँ ने नगर के बाहर पहरेदार लगा दिये थे।

बारात जैसे ही लाल महल पहुँची —

एक-एक कमरे में खोजा –

अब अन्त में –

गज़ब! शिवाजी है!

शाइस्ता खाँ भागा जा रहा है!

शाइस्ता खाँ भाग तो गया – परन्तु उसकी तीन उँगलियाँ कट गयीं!

इस घटना से शाइस्ता खाँ के हौसले पस्त हो गये!

शिवाजी तो भूत-प्रेत की तरह आता-जाता है!

शिवाजी ने कुछ समय शान्ति से बिताया। परन्तु....
जब तक पूरी स्वतंत्रता नहीं मिलती, हमें शान्ति नहीं मिलेगी।
हमें धन चाहिए, महाराज। युद्ध बहुत महँगा होता है।
गुप्तचरों का कहना है कि सूरत में धन बहुत है।
जी हाँ! फिरंगियों ने हमारे देश को लूट-लूट कर सारी संपत्ति वहाँ जमा की है।
औरंगज़ेब का शानदार बन्दरगाह भी है वह।
तो- चलो सूरत।

शिवाजी ने बिजली की तेज़ी से सूरत पर आक्रमण किया।
उन्होंने चार दिन नगर को लूटा।
किसी निर्धन को मत लूटना – और किसी स्त्री को मत सताना।
वे जितनी जल्दी आये थे उतनी जल्दी लौट गए।
औरंगज़ेब के कान खड़े हुए।
इसे कुचलना होगा। राजा जय सिंह, तुम हमारे सबसे शक्तिशाली सरदार हो। जाओ शिवाजी को परास्त करो।
जैसी आज्ञा सम्राट की।

राजा जयसिंह इटालियनों द्वारा प्रशिक्षित तोपखाना ले कर चले। कई दुर्ग उन्होंने जीत लिये –

शिवाजी को जयसिंह के साथ अस्थायी सन्धि करनी पड़ी।

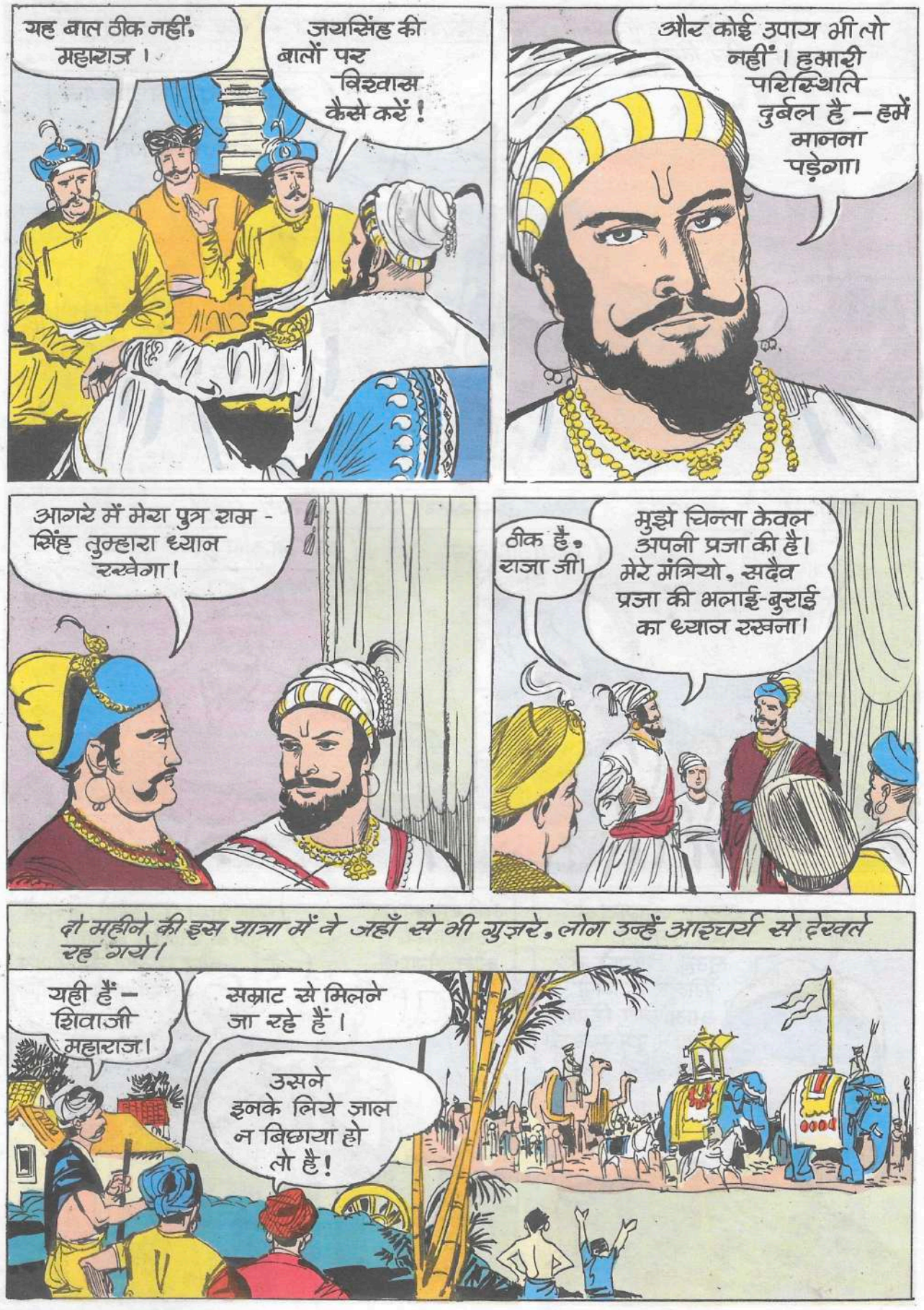
यह बात ठीक नहीं, महाराज।
जयसिंह की बातों पर विश्वास कैसे करें!
और कोई उपाय भी तो नहीं। हमारी परिस्थिति दुर्बल है – हमें मानना पड़ेगा।
आगरे में मेरा पुत्र राम-सिंह तुम्हारा ध्यान रखेगा।
ठीक है, राजा जी।
मुझे चिन्ता केवल अपनी प्रजा की है। मेरे मंत्रियो, सदैव प्रजा की भलाई-बुराई का ध्यान रखना।
दो महीने की इस यात्रा में वे जहाँ से भी गुज़रे, लोग उन्हें आश्चर्य से देखते रह गये।
यही हैं – शिवाजी महाराज।
सम्राट से मिलने जा रहे हैं।
उसने इनके लिये जाल न बिछाया हो तो है!

और अन्त में-
आपका स्वागत है। आप इस अतिथि-गृह में रहिये।
पहरा क्यों लगा है?
आपके सम्मान और आपकी सुरक्षा के लिए।
अगले दिन-
तुम रामसिंह हो?
जी हाँ। आज सम्राट का जन्म-दिवस है। दरबार लगेगा- उसमें आप भी आमंत्रित हैं।
पिता और पुत्र मन में शंका लेकर दरबार में गये।

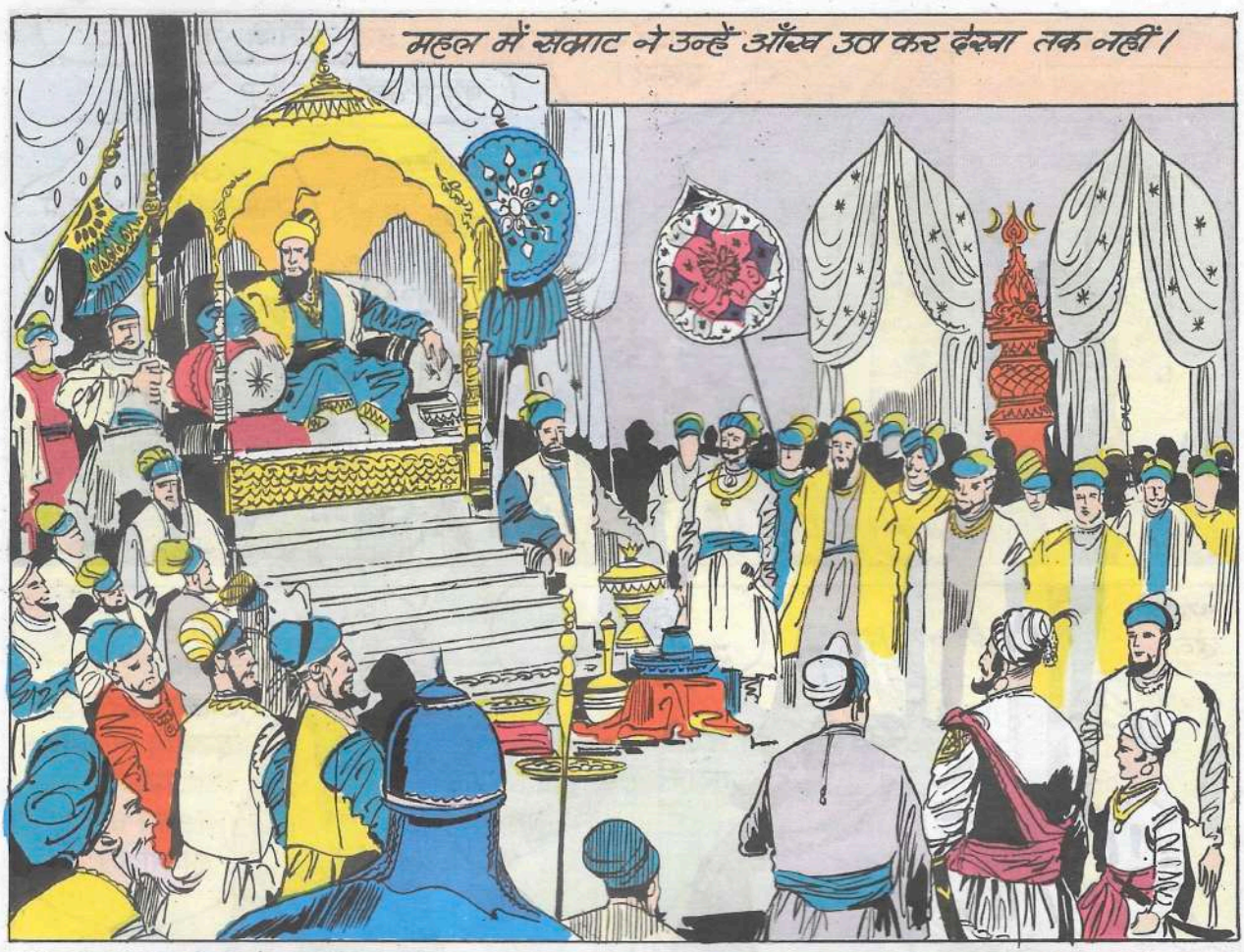

महल में सम्राट ने उन्हें आँख उठा कर देखा तक नहीं।
उन्हें निम्न वर्ग के अधिकारियों के साथ खड़ा किया गया।
आपने देखा, पिताजी। सम्राट ने औरों को उपहार दे कर सम्मानित किया– और हमारी उपेक्षा की।
शिवाजी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।
यह सरासर अपमान है। उन लोगों का सम्मान किया जिन्हें मैंने हराया है।

वे क्रोध में भरे वहाँ से चल दिये।

कृपा कीजिये–

बोलो मत।

शिवाजी के आचरण से सम्राट को आश्चर्य हुआ।

अजीब आदमी है। इसे कल बुलाना – इसको और इसके बेटे को मैं इज़्ज़त बख़्शूँगा।

लेकिन समय निकल चुका था।

सम्राट से कहना मुझे बुख़ार है। मैं नहीं आ सकता।

अतः सम्भाजी अकेले दरबार में गये। तलवार भेंट कर के उनका सम्मान किया गया।

तुमने ठीक तरह झुक कर कोर्निश नहीं बजायी।

मैं झुकता हूँ केवल भगवान और अपनी माता के आगे।

शिवाजी को सम्राट की नीयत पर सन्देह था।
मैं समझ गया – जाल बिछाया गया है। सम्राट हमें बन्दी करना चाहता है।
हमें मार डाला जायेगा, पिता जी?
शिवाजी ने बुखार का बहाना किया था। यह बहाना काम आया और उन्होंने भाग निकलने की योजना बनायी।
हम प्रति दिन टोकरों में मिठाई बँटवायेंगे।
यह मिठाई गरीबों के लिए है।
भगवान हमारे शिवाजी महाराज को शीघ्र ही निरोग करें।

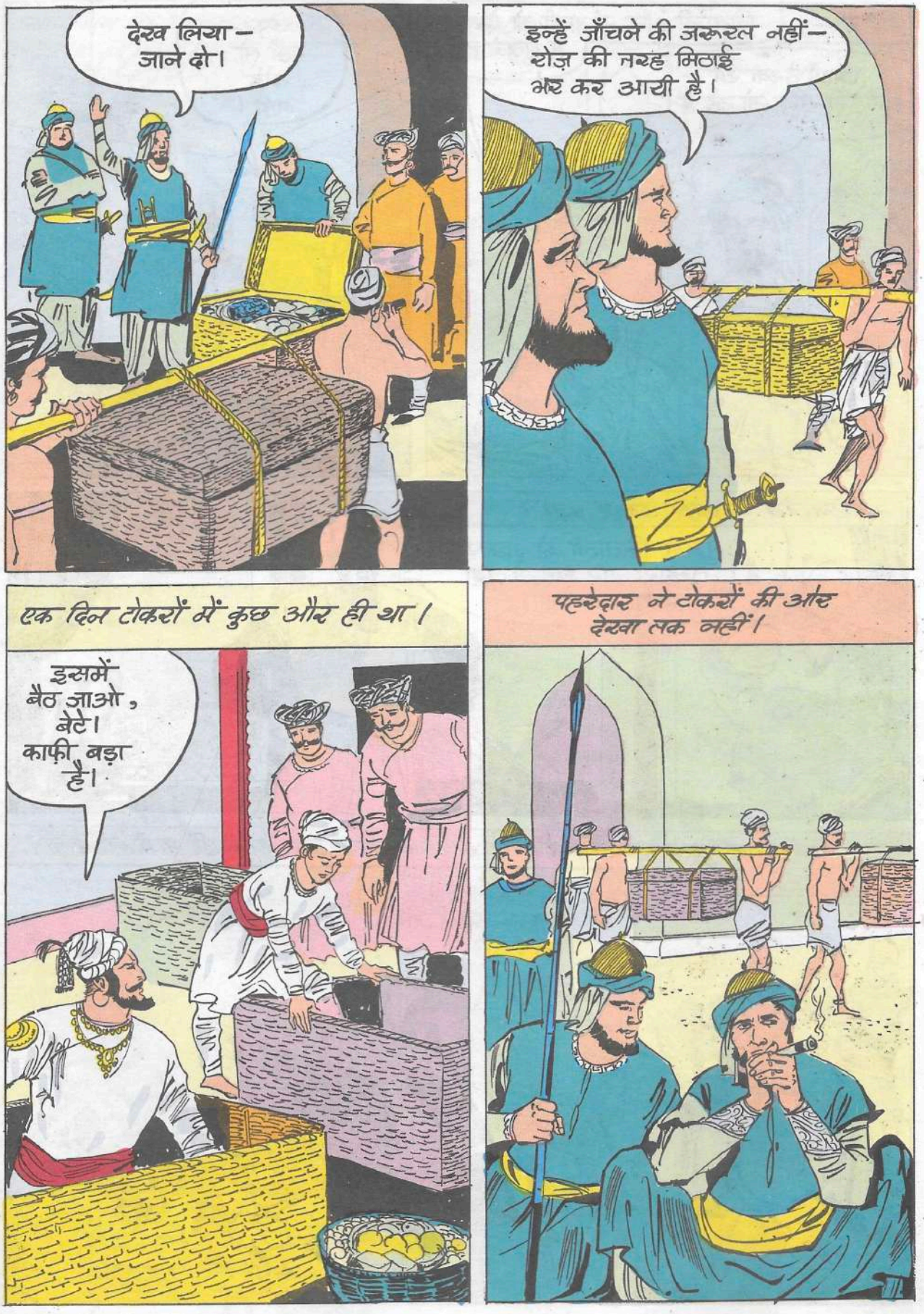
देख लिया — जाने दो।
इन्हें जाँचने की जरूरत नहीं — रोज़ की तरह मिठाई भर कर आयी है।
एक दिन टोकरों में कुछ और ही था।
इसमें बैठ जाओ, बेटे। काफ़ी बड़ा है।
पहरेदार ने टोकरों की ओर देखा तक नहीं।

बाद में –
शिवाजी और संभाजी को देखा है तुमने ?
अभी देखा था – गहरी नींद सो रहे हैं।
उफ़ – यहाँ तो कोई नहीं।
औरंगज़ेब का क्रोध उबल पड़ा।
तुमने शिवाजी को भगाया है। तुम्हारा सर धड़ से जुदा किया जायेगा।
चारों ओर घुड़सवार दौड़ाये गये लेकिन शिवाजी का कहीं पता न चला।

बार-बार भेष बदलते हुए शिवाजी दक्षिण में आ पहुँचे। सभी जगह लोगों ने उनकी सहायता की।

आगरे से इस प्रकार साहसपूर्वक निकल आने के कुछ वर्षों बाद रायगढ़ में धूमधाम से शिवाजी का राजतिलक किया गया।

राजतिलक के बाद उन्होंने केवल पाँच वर्ष शासन किया; तथापि मराठों की जो शक्ति उन्होंने स्थापित की वह उनके बाद भी वर्षों तक बनी रही।